Cultivation Practices - Black Gram

Climate : It is cultivated generally during rainy and summer season in the eastern states, it is also grown during winter, In Central and Southern states, where there is not much variation in the climate, it is cultivated during winter and rainy seasons.

Land Preparation : The most ideal soil is a well-drained loam with pH of 6.5 to 7.8. Land is prepared like any other kharif season pulse crop. However, during summer, it requires a thorough preparation to give a pulverized free from stubbles and weeds completely.

Sowing Time : In Kharif, sowing is done with the onset of monsoon in later part of June or early part of July. In Rabi, second fortnight of October (upland) second fortnight of November (Rice fallow). In Summer, from the third week of February to first week of April.

Seed Rate : Kharif : 12-15 kg/ha;
Rabi - 18-20 kg/ha & Summer: 20-25 kg/ha

Seed Treatment : Treat the seed with Thirum (2g) + Carbendazim (1g) or Carbendazim @2.5 g/kg seed to control the soil & seed germinated disease. For sucking pest control seed treatment with Imidacloprid 70 WS @ 7 g/kg seed. It is also desirable to treat the seed with Rhizobium & PSB culture (5-7 gm/kg seed).

Spacing: Row distance of 30-45 cm. with 10-15 cm. plant spacing.

Depth: Sow seeds at a depth of 3-5 cm

Nutrient Management : For sole crop 15-20 kg/ha Nitrogen, 40-50 kg/ha Phosphorus, 30-40 kg/ha Potash, 20 kg/ha Sulphur is should be applied at the time of last ploughing. However phosphatic, potassic fertilizer and micronutrient should be applied as per soil test value.

Water Management : In kharif season irrigation not required, if rainfall is normal & if moisture deficit at pod formation stage irrigation should apply. In summer 3-4 irrigation required according to crop requirement. Generally, the crop should get irrigation at an interval of 10-15 days. From flowering to pod development stage, there is need of sufficient moisture in the field.

Weed Management : One or two hand weeding should be done up to 40 days of sowing depending upon the weed intensity. Weeds can be controlled by the use of chemicals too. Use Pendimethalin 0.75-1.00 kg a.i. per ha in 400-600 liters of water as pre-emergence application.

Pest & Disease Management: There is several important disease of Urdbean, Yellow mosaic virus; Powdery mildew, leaf blight etc. are important one.Implement appropriate control measures, such as using recommended insecticides (to control pests) and fungicides (if fungal diseases appeared).

Harvesting & Threshing: when 70-80 % pods matured & most of the pods turn black. Over maturity may result in shattering.

Disclaimer: This is general recommendation of package of practices for the Black Gram, but specific recommendations may be followed according to local agriculture institutes/departments.

EAGLE SEEDS AND BIOTECH PVT. LTD.
801, Apollo Premier, Vijay Nagar Square, Indore 452010 (M.P.) INDIA
www.eagleseeds.com
Customer Care Cell : Officer (Sales Co ordinator)
Toll Free No. : 70240 25555, Email : customer.care@eagleseeds.com
Address as above

Let's grow!

उड़द की खेती की विधि

जलवायु : पूर्वी राज्यों में वर्षा ऋतु और गर्मी के मौसम में उगाई जाती है, इसे सर्दियों में भी उगाया जाता है।मध्य और दक्षिणी राज्यों में, जहाँ जलवायु में अधिक भिन्नता नहीं होती, वहाँ इसे सर्दियों और वर्षा ऋतु में उगाया जाता है।

भूमि की तैयारी : सबसे उपयुक्त मिट्टी अच्छी तरह से जल निकासी वाली दोमट होती है जिसका pH 6.5 से 7.8 के बीच होता है।भूमि की तैयारी अन्य खरीफ ऋतु की दलहनी फसलों की तरह की जाती है।हालाँकि, गर्मी के मौसम में, भूमि की पूरी तरह से जुताई की जाती है ताकि मिट्टी भुरभुरी हो और अवशेष तथा खरपतवार पूरी तरह से हट जाएं।

बुआई का समय : खरीफ: मानसून की शुरुआत के साथ, जून के अंतिम सप्ताह या जुलाई के पहले सप्ताह में।रबी: अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़े में (ऊंची भूमि), नवंबर के द्वितीय पखवाड़े में (धान कटाई के बाद)।गर्मी: फरवरी के तीसरे सप्ताह से अप्रैल के पहले सप्ताह तक।

बीज दर : खरीफ: 12-15 किग्रा/हेक्टेयर
रबी: 18-20 किग्रा/हेक्टेयर गर्मी: 20-25 किग्रा/हेक्टेयर

बीजोपचार : बीज को थाइरम (2 ग्राम) + कार्बेन्डाज़िम (1 ग्राम) या केवल कार्बेन्डाज़िम @ 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से उपचारित करें ताकि मृदा एवं बीज जनित रोग नियंत्रित किए जा सकें।बीज से उपचार करें।बीज को राइजोबियम और पीएसबी कल्चर (5-7 ग्राम प्रति किग्रा बीज) से उपचारित करना भी वांछनीय है।

दूरी : पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30-45 सेमी और पौधे से पौधे की दूरी 10-15 सेमी रखें।गहराई (Depth):बीजों को 3-5 सेमी गहराई में बोयें।

पोषक तत्व प्रबंधन : एकल फसल के रूप में: नाइट्रोजन: 15-20 किग्रा/हेक्टेयर, फास्फोरस: 40-50 किग्रा/हेक्टेयर, पोटाश: 30-40 किग्रा/हेक्टेयर, गंधक: 20 किग्रा /हेक्टेयर यह सभी अंतिम जुताई के समय डालें। हालांकि, फास्फेटिक, पोटाशिक उर्वरक और सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग मृदा परीक्षण के अनुसार करें।

सिंचाई प्रबंधन : खरीफ ऋतु में सामान्य वर्षा होने पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती।यदि फली निर्माण अवस्था में नमी की कमी हो तो सिंचाई करें।गर्मी में फसल की आवश्यकता के अनुसार 3-4 बार सिंचाई करें।सामान्यतः 10-15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।फूल आने से लेकर फली बनने तक खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।

खरपतवार प्रबंधन : बोआई के 40 दिनों तक खरपतवार की मात्रा के अनुसार एक या दो बार निराई-गुड़ाई करें।रासायनिक विधि से भी नियंत्रण किया जा सकता है।पेन्डीमेथालिन @ 0.75-1.00 किग्रा सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर को 400-600 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के बाद तुरंत छिड़काव करें (पूर्व उगने के समय)।

कीट एवं रोग प्रबंधन : उड़द की कई प्रमुख बीमारियाँ हैं जैसे –पीलिया मोज़ेक वायरस (Yellow Mosaic Virus), पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew), पत्ती झुलसा (Leaf Blight) आदि।इनका नियंत्रण उपयुक्त कीटनाशकों और फफूंदनाशकों के प्रयोग से करें।

कटाई एवं गहाई : जब 70-80% फली पक जाएं और अधिकतर फली काली पड़ जाए, तब कटाई करें।अत्यधिक पकने पर फलियों के फटने से दाने झड़ सकते हैं।

अस्वीकरण : यह उड़द की खेती के लिए सामान्य सस्य क्रियाओं का सुझाव है। क्षेत्र विशेष के अनुसार स्थानीय कृषि संस्थानों/विभागों की सलाह अवश्य लें।

ईगल सीड्स एण्ड बायोटेक प्रा. लि.
801, Apollo Premier, Vijay Nagar Square, Indore 452010 (M.P.) INDIA
www.eagleseeds.com
Customer Care Cell : Officer (Sales Co ordinator)
Toll Free No. : 70240 25555, Email : customer.care@eagleseeds.com
Address as above

Let's grow!

उडीद लागवड तंत्रज्ञान

हवामान: पूर्वेकडील राज्यांमध्ये साधारणपणे पावसाळी आणि उन्हाळी हंगामात याची लागवड केली जाते, हिवाळ्यात देखील याची लागवड केली जाते. मध्य आणि दक्षिणेकडील राज्यांमध्ये, जिथे हवामानात फारसा फरक नाही, तिथे हिवाळा आणि पावसाळी हंगामात याची लागवड केली जाते.

जमीन तयार करणे: सर्वात आदर्श माती म्हणजे चांगला निचरा होणारी चिकणमाती आणि 6.5 ते 7.8 सामू असलेली माती. जमीन इतर कोणत्याही खरीप हंगामातील डाळींच्या पिकांसारखीच तयार केली जाते. तथापि, उन्हाळ्यात, पूर्णपणे गवत आणि तणांपासून मुक्त जमिनीसाठी त्याची संपूर्ण तयारी आवश्यक असते.

पेरणीची वेळ: खरीपात, जूनच्या उत्तरार्धात किंवा जुलैच्या सुरुवातीला पावसाळ्याच्या आगमनाने पेरणी केली जाते. रब्बीमध्ये, ऑक्टोबरचा दुसरा पंधरवडा (उंच जमिनीवर) नोव्हेंबरचा दुसरा पंधरवडा (भाते पडीक). उन्हाळ्यात, फेब्रुवारीच्या तिसऱ्या आठवड्यापासून एप्रिलच्या पहिल्या आठवड्यापर्यंत.

बियाण्याचा दर: खरीप: 12-15 किलो/हेक्टर;
रब्बी: 18-20 किलो/हेक्टर आणि उन्हाळी: 20-25 किलो/हेक्टर

बीजप्रक्रिया : माती आणि बियाण्यांवर अंकुरित होणारे रोग नियंत्रित करण्यासाठी थायरम (2 ग्रॅम) + कार्बेन्डाझिम (1 ग्रॅम) किंवा कार्बेन्डाझिम @ 2.5 ग्रॅम/किलो बियाण्याची प्रक्रिया करा. शोषक कीटक नियंत्रणासाठी इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यूएस @7 ग्रॅम/किलो बियाण्याची प्रक्रिया करा. रायझोबियम आणि पीएसबी कल्चर (5-7 ग्रॅम/किलो बियाण्याची प्रक्रिया करणे देखील इष्ट आहे.

अंतर: ओळीतील अंतर 30-45 सेमी आणि रोपांमधील अंतर 10-15 सेमी.

पोषक तत्वांचे व्यवस्थापन: एकमेव पिकासाठी शेवटच्या नांगरणीच्या वेळी 15-20 किलो/हेक्टर नत्र, 40-50 किलो/हेक्टर स्फुरद, 30-40 किलो/हेक्टर पोटॅश, 20 किलो/हेक्टर सल्फर द्यावे. तथापि, माती परीक्षणाच्या मूल्यांनुसार फॉस्फेटिक, पोटॅशिक खते आणि सूक्ष्म अन्नद्रव्ये द्यावीत.

सिंचन: जर पाऊस सामान्य असेल आणि शेंगा तयार होताना ओलावा कमी नसेल तर खरीप हंगामात सिंचनाची आवश्यकता नाही. उन्हाळ्यात पिकाच्या गरजेनुसार 3-4 सिंचन करावे. सर्वसाधारणपणे, पिकाला 10-15 दिवसांच्या अंतराने सिंचन द्यावे. फुल धारणेपासून शेंगा वाढीच्या अवस्थेपर्यंत शेतात पुरेसा ओलावा असणे आवश्यक असते.

तण व्यवस्थापन: तणांच्या तीव्रतेनुसार पेरणीपासून 40 दिवसांपर्यंत एक किंवा दोन हाताने तण उपटावे. रसायनांचा वापर करूनही तणांचे नियंत्रण करता येते. पेंडीमेथालिन 0.75-1.00 किलो ए.आय. प्रति हेक्टर 400-600 लिटर पाण्यात मिसळून उगवणपूर्व वापरावे.

कीटक आणि रोग व्यवस्थापन: उडिदावरचे अनेक महत्त्वाचे रोग आहेत, पिवळा मोज़ेक; बुरशी, पानांचा करपा इत्यादी. योग्य नियंत्रण उपाय लागू करा, जसे की शिफारस केलेल्या कीटकनाशकांचा वापर (कीटकांवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी) आणि बुरशीनाशकांचा वापर (जर बुरशीजन्य रोग दिसले तर).

काढणी आणि मळणी: जेव्हा 70-80% शेंगा परिपक्व होतात आणि बहुतेक शेंगा काळ्या पडतात. जास्त परिपक्वतेमुळे तुकडे होऊ शकतात.

अस्वीकरण: ही उडीद लागवड तंत्रज्ञानाची सामान्य शिफारस आहे, परंतु स्थानिक कृषी संस्था/विभागांनुसार विशिष्ट शिफारसींचे पालन केले जाऊ शकते.

ईगल सीड्स ॲण्ड बायोटेक प्रा. लि.
801, Apollo Premier, Vijay Nagar Square, Indore 452010 (M.P.) INDIA
www.eagleseeds.com
Customer Care Cell : Officer (Sales Co ordinator)
Toll Free No. : 70240 25555, Email : customer.care@eagleseeds.com
Address as above

Let's grow!

અડદ ખેતી માર્ગદર્શિકા

હવામાન:કાળો ગ્રામ પૂર્વીય રાજ્યોમાં સામાન્ય રીતે વરસાદી તથા ઉનાળાની ઋતુમાં ઉગાડવામાં આવે છે. મધ્ય રાજ્યોમાં પણ વરસાદી અને ઉનાળાની ઋતુમાં ઉગાડવામાં આવે છે. મધ્ય અને દક્ષિણી રાજ્યોમાં શિયાળાની ઋતુમાં પણ ઉગાડવામાં આવે છે, કારણ કે ત્યાં હવામાનમાં ખાસ ફેરફાર નથી.

જમીનની તૈયારી : સૌથી અનુકૂળ જમીન: 6.5 થી 7.8 પીએચ ધરાવતી સારી રીતે પાણી નિકાસ થઈ જતી જમીન. જમીનને ખરીફ કઠોળ પાકની જેમ જ સારી રીતેતૈયારકરવી. ઉનાળામાં જમીન ખેડ કરી સંપૂર્ણપણે જંતુ તથા નીંદણ મુક્ત કરવી જરૂરી છે.

વાવણીનો સમય : ખરીફ: જૂનનો છેલ્લો ભાગ કે જુલાઈનો આરંભ (ચોમાસાની શરૂઆત). રવિ (શિયાળો): ઑક્ટોબરનો બીજુ અઠવાડિયું કે નવેમ્બરનો બીજુ અઠવાડિયું (ચોખા પછીની જમીનમાં).

ઉનાળો: ફેબ્રુઆરીનો ત્રીજો અઠવાડિયો થી એપ્રિલનો પહેલો સપ્તાહ.

બીજની માત્રા : ખરીફ: ૧૨–૧૫ કિ.ગ્રા./હે.રબી: ૧૮–૨૦ કિ.ગ્રા./હે.ઉનાળો: ૨૦–૨૫ કિ.ગ્રા./હે.

બીજ ઉપચાર : કાર્બેન્ડઝિમ @ ૨.૫ ગ્રામ પ્રતિ કિ.ગ્રા. બીજ અથવા કાર્બેન્ડઝિમ ૧ ગ્રામ + કેપ્ટાન ૨ ગ્રામ પ્રતિ કિ.ગ્રા. ઇમિડાક્લોપ્રિડ ૭૦ ડબલ્યુએસ @ ૭ ગ્રામ પ્રતિ કિ.ગ્રા. બીજ (જંતુ નિયંત્રણ માટે).રાઈઝોબિયમ તથા પી.એસ.બી. કલ્ચર @ ૫–૭ ગ્રામ પ્રતિ કિ.ગ્રા. બીજ.

અંતર અને ઊંડાણ : લાઇન અંતર: ૩૦–૪૫ સે.મી.છોડ અંતર: ૧૦–૧૫ સે.મી.બીજ ઊંડાણ: ૩–૫ સે.મી.

પોષક વ્યવસ્થાપન : નાઇટ્રોજન ૧૫–૨૦ કિ.ગ્રા./હે.ફોસ્ફરસ ૪૦–૫૦ કિ.ગ્રા./હે.પોટાશ ૩૦–૪૦ કિ.ગ્રા./હે.સલ્ફર ૨૦ કિ.ગ્રા./હે.માટી પરીક્ષણ મુજબ માઇક્રોન્યુટ્રિએન્ટ્સ આપવાં.

સિંચાઈ : ખરીફ: સામાન્ય રીતે સિંચાઈ જરૂરી નથી, જો વરસાદ પૂરતો હોય.ફળી (શિંગ) રચના તબક્કે ભેજની ખોટ જણાય તો સિંચાઈ આપવી.ઉનાળો: ૩–૪ સિંચાઈ જરૂરી; સામાન્ય રીતે ૧૦–૧૫ દિવસના અંતરે.ફળી (શિંગ) વિકાસ અને ફૂલ તબક્કે ભેજનું પૂરતું પ્રમાણ જરૂરી.

નીંદણ નિયંત્રણ: ૪૦ દિવસ સુધી એક કે બે વખત હાથની નીંદણી કરવી.પેન્ડીમીથીલિન @ ૦.૭૫–૧.૦૦ કિ.ગ્રા./હે. (૪૦૦–૬૦૦ લિટર પાણીમાં) પૂર્વ ઉદ્ભવ છંટકાવ કરવો.

૧૦. રોગ અને જંતુ નિયંત્રણ:મુખ્ય રોગો: પીળા મોઝેક વાયરસ, પાવડરી ફૂગ, પાંદડા બ્લાસ્ટ.ભલામણ કરેલા જંતુનાશક અને ફૂગનાશકનો સમયસર ઉપયોગ કરવો.

લણણી અને સંગ્રહ : ૭૦–૮૦% શિંગ પરિપક્વ થાય અને મોટાભાગના શીંગો કાળા થાય ત્યારે લણણી કરવી.શિંગ માંથી બીજ ખરી પડવા (છૂટા પડવાથી) બચવા માટે સમયસર લણણી કરવી.

અસ્વીકરણ: આ **અડદ**ના પાક માટેના ખેતી પધ્ધતિઓની સામાન્ય ભલામણ છે, પરંતુ સ્થાનિક કૃષિ સંસ્થાઓ/વિભાગો અનુસાર ચોક્કસ ભલામણોનું પાલન કરી શકાય છે.

ઈગલ સીડ્સ એન્ડ બાયોટેક પ્રા. લિ.
801, Apollo Premier, Vijay Nagar Square, Indore 452010 (M.P.) INDIA
www.eagleseeds.com
Customer Care Cell : Officer (Sales Co ordinator)
Toll Free No. : 70240 25555, Email : customer.care@eagleseeds.com
Address as above

Let's grow!

ଅଭ୍ୟାସର ପ୍ୟାକେଜ୍ ବିରି

ଜଳବାୟୁ : ଗହମ ସମସ୍ତ ପ୍ରକାରର ଜଳବାୟୁ ପରିସ୍ଥିତିରେ ଚାଷ କରାଯାଏ ଯଥା ଉଷ୍ଣକଟିବନ୍ଧୀୟ, ଉପ-ଉଷ୍ଣକଟିବନ୍ଧୀୟ ଏବଂ ସମଶୀତୋଷ୍ଣ। ଶୀତଦିନ ଗହମ ଫସଲର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ବହୁତ ଅନୁକୂଳ ଏବଂ ଖରାଦିନ। ସର୍ବୋତ୍ତମ ବୃଦ୍ଧି ଏବଂ ବିକାଶ ପାଇଁ ତାପମାତ୍ରା ଦୈନିକ ହାରାହାରି ୨୦ ରୁ ୨୫ ° ସେଲସିୟସ୍।

ଜମି ପ୍ରସ୍ତୁତି: ଭଲ ସମାନ ଅଙ୍କୁରିତ ହେବା ପାଇଁ ଭଲ ଭାବରେ ପେଷି ହୋଇଥିବା କିନ୍ତୁ ଘନ ବିହନ ଶଯ୍ୟା। ମାଟି ଘୋଡ଼ାଇ ଲଙ୍ଗଳ ସହିତ ଗୋଟିଏ ଗଭୀର ହଳ କରିବା ଏବଂ ତା'ପରେ ଦୁଇ ଥର ମାଟି ଗୁଣ୍ଡ କରି ଏବଂ ମହି କରିବା ବାଞ୍ଛନୀୟ।

ଜଳବାୟୁ : ପୂର୍ବ ରାଜ୍ୟଗୁଡ଼ିକରେ ସାଧାରଣତଃ ବର୍ଷା ଏବଂ ଗ୍ରୀଷ୍ମ ଋତୁରେ ଏହା ଚାଷ କରାଯାଏ, ଶୀତ ସମୟରେ ମଧ୍ୟ ଏହା ଚାଷ କରାଯାଏ, ମଧ୍ୟ ଏବଂ ଦକ୍ଷିଣ ରାଜ୍ୟଗୁଡ଼ିକରେ, ଯେଉଁଠାରେ ଜଳବାୟୁରେ ବହୁତ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୁଏ ନାହିଁ, ଶୀତ ଏବଂ ବର୍ଷା ଋତୁରେ ଏହା ଚାଷ କରାଯାଏ।

ଭୂମି ପ୍ରସ୍ତୁତି : ସବୁଠାରୁ ଆଦର୍ଶ ମାଟି ହେଉଛି ଏକ ଭଲ ଜଳ ନିଷ୍କାସନ ହୋଇଥିବା ଦୋରସା ମାଟି ଯାହାର pH 6.5 ରୁ 7.8। ଅନ୍ୟ ଯେକୌଣସି ଖରିଫ ଋତୁର ଡାଲି ଫସଲ ପରି ଜମି ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯାଏ। ତଥାପି, ଗ୍ରୀଷ୍ମ ଋତୁରେ, ଏହାକୁ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଭାବରେ ନଡ଼ା ଏବଂ ଘାସ ମୁକ୍ତ କରି ଏକ ପକ୍କା ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବା ଆବଶ୍ୟକ।

ବୁଣିବା ସମୟ : ଖରିଫରେ, ଜୁନ୍ ମାସର ଶେଷ ଭାଗରେ କିମ୍ବା ଜୁଲାଇର ପ୍ରାରମ୍ଭରେ ମୌସୁମୀ ଆସିବା ସହିତ ବୁଣା କରାଯାଏ। ରବି ମାସରେ, ଅକ୍ଟୋବରର ଦ୍ୱିତୀୟ ପକ୍ଷ (ଉଚ୍ଚଭୂମି) ନଭେମ୍ବରର ଦ୍ୱିତୀୟ ପକ୍ଷ (ଧାନ ଜମି)। ଗ୍ରୀଷ୍ମ ଋତୁରେ, ଫେବୃଆରୀର ତୃତୀୟ ସପ୍ତାହରୁ ଏପ୍ରିଲର ପ୍ରଥମ ସପ୍ତାହ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ।

ବିହନ ହାର : ଖରିଫ: ହେକ୍ଟର ପ୍ରତି ୧୨-୧୫ କିଲୋଗ୍ରାମ; ରବି - ୧୮-୨୦ କିଲୋଗ୍ରାମ/ହେକ୍ଟର ଏବଂ ଗ୍ରୀଷ୍ମ ଋତୁ: ୨୦-୨୫ କିଲୋଗ୍ରାମ/ହେକ୍ଟର

ବିହନ ବିଶୋଧନ: ମାଟି ଏବଂ ବିହନ ଅଙ୍କୁରିତ ରୋଗ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ପାଇଁ ଥିରମ୍ (୨ଗ୍ରାମ) + କାର୍ବେଣ୍ଡାଜିମ୍ (୧ଗ୍ରାମ) କିମ୍ବା କାର୍ବେଣ୍ଡାଜିମ୍ @୨.୫ ଗ୍ରାମ/କେଜି ବିହନ ସହିତ ବିହନ ବିଶୋଧନ କରନ୍ତୁ। ଶୋଷକ କୀଟ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ପାଇଁ ଇମିଡାକ୍ଲୋପ୍ରିଡ୍ ୭୦ ଡବ୍ଲୁଏସ୍ @ ୭ ଗ୍ରାମ/କେଜି ବିହନ ସହିତ ବିହନ ବିଶୋଧନ କରନ୍ତୁ। ରାଇଜୋବିୟମ୍ ଏବଂ ପିଏସବି କଲଚର (୫-୭ ଗ୍ରାମ/କେଜି ବିହନ) ସହିତ ବିହନ ବିଶୋଧନ କରିବା ମଧ୍ୟ ବାଞ୍ଛନୀୟ।

ବ୍ୟବଧାନ : ଧାଡି ଦୂରତା ୩୦-୪୫ ସେମି ଏବଂ ଗଛ ମଧ୍ୟରେ ୧୦-୧୫ ସେମି। ବ୍ୟବଧାନ।

ଗଭୀରତା : ୩-୫ ସେମି ଗଭୀରତାରେ ବିହନ ବୁଣନ୍ତୁ,

ସାର ପରିଚାଳନା : ଏକମାତ୍ର ଫସଲ ପାଇଁ ୧୫-୨୦ କିଲୋଗ୍ରାମ/ହେକ୍ଟର ଯବକ୍ଷାରଜାନ, ୪୦-୫୦ କିଲୋଗ୍ରାମ/ହେକ୍ଟର ଫସଫରସ୍, ୩୦-୪୦ କିଲୋଗ୍ରାମ/ହେକ୍ଟର ପଟାସ, ୨୦ କିଲୋଗ୍ରାମ/ହେକ୍ଟର ସଲଫର ଶେଷ ହଳ ସମୟରେ ପ୍ରୟୋଗ କରାଯିବା ଉଚିତ। ତଥାପି ମୃତ୍ତିକା ପରୀକ୍ଷା ମୂଲ୍ୟ ଅନୁଯାୟୀ ଫସଫେଟିକ୍, ପଟାସିକ ସାର ଏବଂ ସୂକ୍ଷ୍ମ ପୋଷକ ତତ୍ତ୍ୱ ପ୍ରୟୋଗ କରାଯିବା ଉଚିତ।

ଜଳ ପରିଚାଳନା : ଖରିଫ ଋତୁରେ ଜଳସେଚନ ଆବଶ୍ୟକ ନୁହେଁ, ଯଦି ବର୍ଷା ସ୍ୱାଭାବିକ ହୁଏ ଏବଂ ଯଦି ଛୁଇଁ ଗଠନ ସମୟରେ ଆର୍ଦ୍ରତା ଅଭାବ ହୁଏ ପର୍ଯ୍ୟାୟ ଜଳସେଚନ ପ୍ରୟୋଗ କରାଯିବା ଉଚିତ। ଗ୍ରୀଷ୍ମ ଋତୁରେ ଫସଲର ଆବଶ୍ୟକତା ଅନୁସାରେ ୩-୪ ଟି ଜଳସେଚନ ଆବଶ୍ୟକ। ସାଧାରଣତଃ, ଫସଲକୁ ୧୦-୧୫ ଦିନ ବ୍ୟବଧାନରେ ଜଳସେଚନ କରାଯିବା ଉଚିତ। ଫୁଲ ଫୁଟିବା ଠାରୁ ଛୁଇଁ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବିକାଶ ପର୍ଯ୍ୟାୟ, କ୍ଷେତରେ ପର୍ଯ୍ୟାପ୍ତ ଆର୍ଦ୍ରତା ଆବଶ୍ୟକ।

ଘାସ ପରିଚାଳନା : ଘାସ ତୀବ୍ରତା ଉପରେ ନିର୍ଭର କରି ବୁଣିବାର ୪୦ ଦିନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଗୋଟିଏ କିମ୍ବା ଦୁଇ ହାତରେ ଘାସ ସଫା କରାଯିବା ଉଚିତ। ରାସାୟନିକ ପଦାର୍ଥ ବ୍ୟବହାର କରି ମଧ୍ୟ ଘାସ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରାଯାଇପାରିବ। ଘାସ ନ ଉଠିବା ପୂର୍ବରୁ ୪୦୦-୬୦୦ ଲିଟର ପାଣିରେ ପ୍ରତି ହେକ୍ଟରରେ ପେଣ୍ଡିମେଥାଲିନ୍ ୦.୭୫ - ୧.୦୦ କିଲୋଗ୍ରାମ ମିଶ୍ରଣ କରି ଛିଟନ କରନ୍ତୁ।

କୀଟ ଏବଂ ରୋଗ ପରିଚାଳନା : ଉର୍ଦବେନ୍, ହଳଦିଆ ମୋଜାଇକ୍ ଭାଇରସର ଅନେକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ରୋଗ ଅଛି; ପାଉଡର ମିଲଡିଉ, ପତ୍ର ପୋଡ଼ା ଇତ୍ୟାଦି ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ। ଉପଯୁକ୍ତ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ବ୍ୟବସ୍ଥା କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ କରନ୍ତୁ, ଯେପରିକି ସୁପାରିଶ କରାଯାଇଥିବା କୀଟନାଶକ (କୀଟପତଙ୍ଗ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ପାଇଁ) ଏବଂ କବକନାଶକ (ଯଦି କବକ ରୋଗ ଦେଖାଦିଏ) ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ।

ଅମଳ : ଯେତେବେଳେ ୭୦-୮୦% ଛୁଇଁ ପରିପକ୍ୱ ହୋଇଯାଏ ଏବଂ ଅଧିକାଂଶ ଛୁଇଁ କଳା ହୋଇଯାଏ। ଅଧିକ ପରିପକ୍ୱତା ଯୋଗୁଁ ଭାଙ୍ଗି ପଡ଼ିପାରେ।

ଅସ୍ୱୀକାର: ଏହା ସୋୟାବିନ୍ ପାଇଁ ଅଭ୍ୟାସ ପ୍ୟାକେଜ୍ ର ସାଧାରଣ ସୁପାରିଶ, କିନ୍ତୁ ସ୍ଥାନୀୟ କୃଷି ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ / ବିଭାଗ ଅନୁଯାୟୀ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସୁପାରିଶ ଅନୁସରଣ କରାଯାଇପାରେ।

Disclaimer: This is general recommendation of package of practices for the Black Gram, but specific recommendations may be followed according to local agriculture institutes/departments.

ଇଗଲ ସିଡସ୍ ଓ ବାୟୋଟେକ ପ୍ରା.ଲି.

801, Apollo Premier, Vijay Nagar Square, Indore 452010 (M.P.) INDIA
www.eagleseeds.com

Customer Care Cell : Officer (Sales Co ordinator)
Toll Free No. : 70240 25555, Email : customer.care@eagleseeds.com
Address as above

ಪ್ಯಾಕೇಜ್ ಆಫ್ ಪ್ರಾಕ್ಟೀಸ್ – ಉರಿದ್ (ಕಪ್ಪು ಗ್ರಾಂ)

ಹವಾಮಾನ: ಈ ಬೆಳೆಯನ್ನು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಪೂರ್ವ ರಾಜ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಮಳೆಗಾಲ ಮತ್ತು ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಮಧ್ಯ ಮತ್ತು ದಕ್ಷಿಣ ರಾಜ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಹವಾಮಾನದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಿನ ಬದಲಾವಣೆ ಇಲ್ಲದ ಕಾರಣ, ಮಳೆಗಾಲ ಹಾಗೂ ಚಳಿಗಾಲದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಭೂಮಿ ಸಿದ್ಧತೆ: ಅತ್ಯುತ್ತಮ ಮಣ್ಣು ಎಂದರೆ ನೀರು ನಿಂತುಕೊಳ್ಳದ ಲೋಮೀ ಮಣ್ಣು, pH 6.5–7.8. ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಹೊಲವನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಕಳೆಗಳಿಂದ ಮುಕ್ತಗೊಳಿಸಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಕುದುರೆ ಮಾಡಬೇಕು.

ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ: ಖರೀಫ್: ಜೂನ್ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ ಅಥವಾ ಜುಲೈ ಮೊದಲ ಭಾಗ (ಮಳೆ ಪ್ರಾರಂಭದ ವೇಳೆ)..ರಬಿ: ಅಕ್ಟೋಬರ್ ಎರಡನೇ ಪಾಕ್ಷಿಕ (ಉಪರಿತಲ), ನವೆಂಬರ್ ಎರಡನೇ ಪಾಕ್ಷಿಕ (ಅಕ್ಕಿ ನಾಟಿ ಬಳಿಕ).ಬೇಸಿಗೆ: ಫೆಬ್ರುವರಿ ಮೂರನೇ ವಾರದಿಂದ ಏಪ್ರಿಲ್ ಮೊದಲ ವಾರದವರೆಗೆ.

ಬಿತ್ತನೆ ಪ್ರಮಾಣ: ಖರೀಫ್: 12–15 ಕೆ.ಜಿ./ಹೆ ರಬಿ: 18–20 ಕೆ.ಜಿ./ಹೆ.
ಬೇಸಿಗೆ: 20–25 ಕೆ.ಜಿ./ಹೆ

ಬಿತ್ತನೆ ಮುನ್ನ ಬೀಜ ಚಿಕಿತ್ಸೆ: ಥಿರಮ್ (2 ಗ್ರಾಂ) + ಕಾರ್ಬೆಂಡಾಜಿಮ್ (1 ಗ್ರಾಂ) ಅಥವಾ ಕಾರ್ಬೆಂಡಾಜಿಮ್ (2.5 ಗ್ರಾಂ/ಕೆ.ಜಿ ಬೀಜ). ಚುಚ್ಚುವ ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕೆ ಇಮಿಡಾಕ್ಲೋಪ್ರಿಡ್ 70 WS (7 ಗ್ರಾಂ/ಕೆ.ಜಿ ಬೀಜ). ರೈಜೋಬಿಯಂ ಮತ್ತು ಪಿ.ಎಸ್.ಬಿ (5–7 ಗ್ರಾಂ/ಕೆ.ಜಿ ಬೀಜ) ಬಳಸುವುದು ಸೂಕ್ತ.

ಅಂತರ: ಸಾಲಿನ ನಡುವೆ 30–45 ಸೆಂ.ಮೀ., ಗಿಡಗಳ ನಡುವೆ 10–15 ಸೆಂ.ಮೀ.

ಆಳ: ಬಿತ್ತನೆ ಆಳ: 3–5 ಸೆಂ.ಮೀ.

ಪೋಷಕ ನಿರ್ವಹಣೆ : 15–20 ಕೆ.ಜಿ. ನೈಟ್ರೋಜನ್, 40–50 ಕೆ.ಜಿ. ಫಾಸ್ಫರಸ್, 30–40 ಕೆ.ಜಿ. ಪೋಟಾಷ್, 20 ಕೆ.ಜಿ. ಸಲ್ಫರ್/ಹೆ ಕೊನೆಯ ಉಳುಮೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಹಾಕಬೇಕು. ಮಣ್ಣಿನ ಪರೀಕ್ಷೆ ಪ್ರಕಾರ ಹೆಚ್ಚುವರಿ ರಾಸಾಯನಿಕಗಳನ್ನು ಹಾಕಬಹುದು.

ನೀರಾವರಿ ನಿರ್ವಹಣೆ:ಖರೀಫ್: ಸಾಮಾನ್ಯ ಮಳೆಯಿದ್ದರೆ ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯವಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ತೇವಾಂಶ ಕೊರತೆ ಇದ್ದರೆ ಪೊದೆಯ ಹಂತದಲ್ಲಿ ನೀರಾವರಿ ಕೊಡಬೇಕು.ಬೇಸಿಗೆ: 3–4 ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯ. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ 10–15 ದಿನಗಳ ಅಂತರದಲ್ಲಿ ನೀರಾವರಿ ಕೊಡಬೇಕು. ಹೂವಿನಿಂದ ಪೊದೆ ಬೆಳೆಯುವವರೆಗೆ ಸಾಕಷ್ಟು ತೇವಾಂಶ ಅಗತ್ಯ.

ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣೆ : ಮೊದಲ 40 ದಿನಗಳಲ್ಲಿ 1–2 ಬಾರಿ ಕಳೆ ತೆಗೆಯಬೇಕು. ಪೆಂಡಿಮೆಥಾಲಿನ್ @ 0.75–1 ಕೆ.ಜಿ. ಸಕ್ರಿಯ ಘಟಕ/ಹೆ (400–600 ಲೀಟರ್ ನೀರಿನಲ್ಲಿ) ಮುಂಚಿತ ಸಿಂಪಡಣೆ ಮಾಡಬಹುದು. ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿರ್ವಹಣೆ:ಹಳದಿ ಮೋಸಿಕ್ ವೈರಸ್, ಪೌಡರಿ ಮಿಲ್ಡ್ಯೂ, ಎಲೆ ಬ್ಲೈಟ್ ಪ್ರಮುಖ. ಸೂಕ್ತ ಕೀಟನಾಶಕ ಹಾಗೂ ಶಿಲೀಂಧ್ರನಾಶಕ ಬಳಸಿ ನಿಯಂತ್ರಿಸಬೇಕು.

ಕೊಯ್ಲು ಮತ್ತು ದಳಿಸುವಿಕೆ : 70–80% ಕಾಯಿ ಪಕ್ವವಾಗಿದ್ದು ಹೆಚ್ಚಿನವು ಕಪ್ಪಾಗುವಾಗ ಕೊಯ್ಯಬೇಕು. ಹೆಚ್ಚು ಪಕ್ವವಾದರೆ ಉದುರುವ ನಷ್ಟ ಉಂಟಾಗಬಹುದು.

ಅಸಮ್ಮತಿ ಸೂಚನೆ: ಇವು ಸಾಮಾನ್ಯ ಶಿಫಾರಸ್ಸುಗಳು; ಸ್ಥಳೀಯ ಕೃಷಿ ಇಲಾಖೆಯ ಸಲಹೆ ಅನುಸರಿಸಬೇಕು.

ಅಸ್ವೀಕರಣ: ಇದು ಉದ್ದಿನ (ಕಪ್ಪು ಗ್ರಾಂ) ಬೆಳೆಗಾಗಿ ಸಾಮಾನ್ಯ ಶಿಫಾರಸು ಮಾಡಿದ ಪ್ಯಾಕೇಜ್ ಆಫ್ ಪ್ರಾಕ್ಟೀಸ್ ಆಗಿದೆ. ಆದರೆ, ವಿಶೇಷ ಶಿಫಾರಸುಗಳನ್ನು ಸ್ಥಳೀಯ ಕೃಷಿ ಸಂಸ್ಥೆಗಳು/ವಿಭಾಗಗಳ ಮಾರ್ಗಸೂಚಿಗಳ ಪ್ರಕಾರ ಅನುಸರಿಸಬೇಕು.

ಈಗಲ್ ಸೀಡ್ಸ್ ಮತ್ತು ಬಯೋಟೆಕ್ ಪ್ರೈವೆಟ್ ಲಿಮಿಟೆಡ್

801, Apollo Premier, Vijay Nagar Square, Indore 452010 (M.P.) INDIA
www.eagleseeds.com

Customer Care Cell : Officer (Sales Co ordinator)
Toll Free No. : 70240 25555, Email : customer.care@eagleseeds.com
Address as above

பயிற்சித் தொகுப்பு – உரிட் (கருப்பு பயறு)

காலநிலை: கிழக்கு மாநிலங்களில் மழைக்காலம் மற்றும் கோடையில் வளர்க்கப்படுகிறது. மத்திய மற்றும் தெற்கு மாநிலங்களில் காலநிலை மாறுபாடு குறைவாக இருப்பதால் மழைக்காலம் மற்றும் குளிர்காலத்தில் பயிரிடப்படுகிறது.

நிலத் தயாரிப்பு : சிறந்த நிலம்: நீர் வடிகால் நன்றாக இருக்கும் லோமி மண், pH 6.5–7.8. கோடையில் நிலம் நன்றாக உழுதுப் பொடியாகவும் களையற்றதாகவும் இருக்க வேண்டும்.

விதைப்புக் காலம்: காரிப்: ஜூன் இறுதி பாகம் அல்லது ஜூலை ஆரம்பம் (மழை தொடக்கம்). ரபி: அக்டோபர் இரண்டாம் பாதி (மேடுநிலம்), நவம்பர் இரண்டாம் பாதி (நெல் அறுவடை பின்). கோடை: பிப்ரவரி மூன்றாம் வாரம் முதல் ஏப்ரல் முதல் வாரம் வரை.

விதை அளவு : காரிப்: 12–15 கிலோ/ஹெ.ரபி: 18–20 கிலோ/ஹெகோடை: 20–25 கிலோ/ஹெ

விதை சிகிச்சை: திரம் (2 கிராம்) + கார்பெண்டசிம் (1 கிராம்) அல்லது கார்பெண்டசிம் (2.5 கிராம்/கிலோ விதை). பூச்சிக் கட்டுப்பாட்டிற்கு இமிடாக்ளோப்ரிட் 70 WS (7 கிராம்/கிலோ விதை). ரைசோபியம் & பி.எஸ்.பி (5–7 கிராம்/கிலோ விதை) பரிந்துரைக்கப்படுகிறது.

இடைவெளி: வரிசை இடைவெளி 30–45 செ.மீ., செடிகளுக்கு இடையில் 10–15 செ.மீ.

ஆழம்: 3–5 செ.மீ. ஆழத்தில் விதைக்க வேண்டும்.

உர நிர்வாகம்: நைட்ரஜன் 15–20 கி., பாஸ்பரஸ் 40–50 கி., பொட்டாஷ் 30–40 கி., சல்பர் 20 கி./ஹெ இறுதி உழவு சமயத்தில் இட வேண்டும். மண் பரிசோதனை அடிப்படையில் கூடுதல் உரங்கள் இடலாம்.

நீர்ப்பாசனம்: காரிப்: சாதாரண மழை போதுமானால் பாசனம் தேவையில்லை. ஈரப்பதம் குறைந்தால் கொட்டைகள் உருவாகும் போது பாசனம் தர வேண்டும். கோடை: 3–4 பாசனங்கள் தேவை. பொதுவாக 10–15 நாட்களுக்கு ஒருமுறை. மலர்ச்சியிலிருந்து கொட்டை வளர்ச்சிவரை போதிய ஈரப்பதம் தேவை.

களை கட்டுப்பாடு: 40 நாட்களுக்குள் 1–2 முறை களை அகற்ற வேண்டும். பெண்டிமெத்தலின் @ 0.75–1 கி./ஹெ (400–600 லிட்டர் நீரில்) முன்னதாக தெளிக்கலாம்.

நோய் மற்றும் பூச்சி கட்டுப்பாடு:மஞ்சள் மொசைக் வைரஸ், பவுடரி மில்டியு, இலை பிளைட் முக்கியமானவை. தகுந்த பூச்சிக்கொல்லி மற்றும் பூஞ்சைக்கொல்லி பயன்படுத்த வேண்டும்.

அறுவடை மற்றும் உரைப்பு: 70–80% கொட்டைகள் பழுத்து பெரும்பாலானவை கருப்பாக மாறும் போது அறுவடை செய்ய வேண்டும். அதிகமாக பழுத்தால் கொட்டைகள் சிதறக்கூடும்.

குறிப்பு: இவை பொதுவான பரிந்துரைகள்; உள்ளூர் வேளாண் துறை அறிவுரைகளைப் பின்பற்ற வேண்டும்.

குறிப்புரை: இது கருப்பு பட்டாணி (Black Gram) பயிருக்கான பொது பராமரிப்பு பரிந்துரைகள் ஆகும். இருப்பினும், சிறப்பான பரிந்துரைகளை உள்ளூர் விவசாய நிறுவனங்கள்/துறைகள் வழங்கும் வழிகாட்டலின்படி பின்பற்ற வேண்டும்.

ஈகிள் சீட்ஸ் அன்ட் பயோடெக் பிரைவேட் லிமிட்டேட்

801, Apollo Premier, Vijay Nagar Square, Indore 452010 (M.P.) INDIA
www.eagleseeds.com

Customer Care Cell : Officer (Sales Co ordinator)
Toll Free No. : 70240 25555, Email : customer.care@eagleseeds.com
Address as above

వ్యవహార పద్ధతులు – ఉరద్ (నల్ల పప్పు)

వాతావరణం: తూర్పు రాష్ట్రాలలో వర్షాకాలం మరియు వేసవిలో పండించబడుతుంది. మధ్య మరియు దక్షిణ రాష్ట్రాలలో వాతావరణ మార్పులు తక్కువగా ఉండడం వల్ల వర్షాకాలం మరియు శీతాకాలంలో పండించబడుతుంది.

భూమి సిద్ధం: అత్యుత్తమ మట్టి: నీరు నిల్వ కాకుండా ఉండే లోమి మట్టి, pH 6.5–7.8. వేసవిలో పొలాన్ని బాగా కలుపులేకుండా మెత్తగా చేయాలి.

విత్తే సమయం:ఖరీఫ్: జూన్ చివరి భాగం లేదా జూలై మొదటి భాగం (వర్షం ప్రారంభంలో).రబి: అక్టోబర్ రెండవ పక్షం (ఎత్తు భూమి), నవంబర్ రెండవ పక్షం (నెల్ల పొలాల తర్వాత).వేసవి: ఫిబ్రవరి మూడవ వారం నుండి ఏప్రిల్ మొదటి వారం వరకు.

విత్తన పరిమాణం: ఖరీఫ్: 12–15 కి.గ్రా/హె.రబి: 18–20 కి.గ్రా/హె.వేసవి: 20–25 కి.గ్రా/హె

విత్తన శుద్ధి: థిరమ్ (2 గ్రా) + కార్బెండాజిమ్ (1 గ్రా) లేదా కార్బెండాజిమ్ (2.5 గ్రా/కిలో విత్తనం). కీటక నియంత్రణకు ఇమిడాక్లోప్రిడ్ 70 WS (7 గ్రా/కిలో విత్తనం). రైజోబియం & పి.ఎస్.బి (5–7 గ్రా/కిలో విత్తనం) వాడాలి.

దూరం: వరుసల మధ్య 30–45 సెం.మీ., మొక్కల మధ్య 10–15 సెం.మీ. లోతు;3–5 సెం.మీ. లోతులో విత్తాలి.

ఎరువుల నిర్వహణ: నత్రజని 15–20 కి., ఫాస్పరస్ 40–50 కి., పొటాష్ 30–40 కి., గంధకం 20 కి./హె. చివరి దున్నకాలంలో వేయాలి. మట్టి పరీక్ష ఆధారంగా అదనపు ఎరువులు వేయాలి.

పారుదల: ఖరీఫ్: సాధారణ వర్షపాతం ఉంటే పారుదల అవసరం లేదు. తేమ లోపిస్తే పొట్లాలు ఏర్పడే సమయంలో నీరు పెట్టాలి. వేసవి: 3–4 పారుదలలు అవసరం. సాధారణంగా 10–15 రోజులకు ఒకసారి. పువ్వుల నుండి పొట్లాలు వచ్చే వరకు తగినంత తేమ ఉండాలి.

కలుపు నియంత్రణ: 40 రోజుల్లోపు 1–2 సార్లు కలుపు తీసేయాలి. పెండిమెథలిన్ @ 0.75–1 కి./హె (400–600 లీటర్ల నీటిలో) ముందుగా స్ప్రే చేయాలి.

రోగాలు మరియు కీటక నియంత్రణ:యెల్లో మొజైక్ వైరస్, పౌడరీ మిల్డ్యూ, ఆకుల బ్లైట్ ప్రధానమైనవి. తగిన కీటకనాశకాలు, శిలీంధ్రనాశకాలు వాడాలి.

పంట కోత & విత్తన వేరు:70–80% పొట్లాలు పక్వం కాగా, ఎక్కువ పొట్లాలు నల్లబడినప్పుడు కోయాలి. ఎక్కువ పక్వం అయితే పొట్లాలు చిట్లిపోతాయి.

గమనిక: ఇవి సాధారణ సూచనలు; స్థానిక వ్యవసాయ శాఖ సూచనలు పాటించాలి.

అసీ్వకారం: ఇది నల్ల పప్పు (Black Gram) పంట కోసం సాధారణ పద్ధతుల సిఫారసు. అయితే, స్థానిక వ్యవసాయ సంస్థలు/విభాగాల మార్గదర్శకాలను అనుసరించి ప్రత్యేక సిఫారసులను పాటించాలి.

ఈగల్ సీడ్స్ అండ్ బయోటెక్ ప్రైవేట్ లిమిటెడ్

801, Apollo Premier, Vijay Nagar Square, Indore 452010 (M.P.) INDIA
www.eagleseeds.com

Customer Care Cell : Officer (Sales Co ordinator)
Toll Free No. : 70240 25555, Email : customer.care@eagleseeds.com
Address as above